International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 6; June 2016; Page No. 49-50

महादेवी काव्य में गीति योजना

Birmati

Research Scholar, Distance Learning, Dept. of Hindi, Kurukshetra, University

सारांश :–

मनुष्य चिंतन करता है, अपनी शक्तियों को समेटकर अपने अनुभवों को कल्पना द्वारा व्यवस्थित कर, संसार को भूलकर तथा सामान्य जीवन से ऊपर उठकर फिर उसे अपने रचनाओ में अभिव्यक्त करता है और शब्दों के माध्यम से पाठकों के पास पहुचाता है तो साहित्य का सृजन होता है। व्यक्तिगत सुख–दुःख की अनुभूति स्वतः द्रवीभूत होकर जब रागात्मक वन जाती है तो वह गीतिकाव्य कहलाता है। गीति कवि कल्पाना की वह उड़ान है जिसके द्वारा वह अपनी भावनाओं को वास्तविक जीवन के माध्यम से व्यक्त करने की चेष्टा करता है।

प्रस्तावना :–

महादेवी वर्मा के स्वयं के शब्दों में ''सुख–दुःख की भावावेशमयी अवस्था को गिने–चुने शब्दों में चित्राण कर देना ही गीत है अनुभूति और अभिव्यक्ति की सुनहली परिणर्ति, भाव, कल्पना और संगीत का मधुर संगम, गम्भीर सरस अभिव्यंजना केवल महादेवी के गीतों मे ही मिलती है। उनको सम्पूर्ण काव्य सृष्टि आत्मकेन्द्रित है, जिसका मूल स्वर वेदना है। महादेवी के प्रथम काव्य संग्रह 'नीहार' में एक गीत है जिसमें आत्म निवेदन में विरहजन्य व्याकुलता के साथ ही संयोग की तीव्र लालसा भी छिपी है।

"जो तुम आते एक पार।
कितनी करूणा कितने संदेश,
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार–तार,
अनुराग भरा उन्माद–राग,
आंसू लेते वे पद पारावार।'' 1

समस्त छायावादी कवियों में महादेवी जी ही ऐसे कवयित्री है जिन्होने अपने काव्य में प्रतीकों का सर्वाधिक प्रयोग किया है। महादेवी जी को दीपक प्रतीक विशेष प्रिय हैं।
यथा,

''मधुर–मधुर मेरे दीपक जल।
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।''2

कवयित्री ने प्रकृति के विभिन्न उपकरणों के साथ अपने जीवन का तादात्मय व्यक्त किया है।

''मैं नीर–भरी दुःख की बदलो
स्पंदन में चिर निस्पन्द बसा
क्रन्दन में आहत विश्व हंसा
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निझेरणी मचली।''3

वेदना महोदवी के काव्य की प्रमुख विशेषता है। अपनी वेदनानुभूति के सम्बन्ध में वे लिखती है– वेदनानुभूति के सम्बन्ध में वे लिखती हे–दुःख मेरे निकट जीवन को ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांध सकने की क्षमता रखता है।''
नीरजा में जहा ऑसुओ की धारा प्रवाहित हो रही है वही दूसरी ओर आशा तथा विश्वास का संदेश विद्यमान है :–

''जलना ही प्रकाश उसमें सुख,
बुझना ही तम है में दुःख
तुझमें चिर दुःख, मुझमें चिर सुख
कैसे होगा प्यार ?'' 4

महादेवी जी के काव्य में रहस्य–संकेत भी सर्वाधिक मात्राा में मिलते हैं, महादेवी जी अपनो रहस्यानुभूति की स्थिति प्राचीन रहस्यवादी कवियों से भिन्न स्तर पर स्वीकार करती है। वे कहती है– '' आज गीत में हम जिस नये रहस्यवाद के रूप में ग्रहण कर रहे हैं, उसने पराविद्या की अपार्थिवता ली, वेदान्त की अद्वैत की छाया ग्रहण की, लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य भाव–सूत्र में बांधकर एक निराले स्नेह–सम्बन्ध की सृष्टि कर डाली, जो मनुष्य के हृदय को आलम्बन दे सका, उसे पार्थिव प्रेम से ऊपर उठा सका तथा मस्तिष्क को हृदयमय और हृदय को मस्तिष्कमय बना सका,''
महादेवी जी के गीतो की भाषा भी सर्वत्र प्रांजल, प्रवाहपूर्ण, स्निग्ध, कोमल और अनुगूंज भरी हुई है।
आचार्य रामचन्द्र शुकल के शब्दों में भाषा का ऐसा स्निग्ध और प्रांजल प्रवाह और कहीं नहीं मिलता है। जगह–जगह ऐसी ढली और उनूठी व्यंजना से भरी हुई पदावली मिलती है कि हृदय खिल उठता है,''
कभी–कभी तो वे लाक्षणिक प्रयोग से भी चित्र बना देती हैं यथा–

''देखकर कोमल व्यथा को
आसुओं के सजल रथ मे,
मोम से सांसे बिछा दी
थी इसी अंगार पथ में।।''
महादेवी एक स्थल पर कहती भी है –
''क्या पूजा क्या अर्चन रे ? 5

डस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लधुतम जीवनरे। मेरी श्वासें करती रहती नित प्रिय का अभिनंद रे।
निष्कर्षतः महादेवी की काव्यभूमि सीमित है। उनकी अनुभूमि में विविधता और विस्तार की कमी है, पर गम्भीरता अधिक है। इनके गीत लोकधुनों से प्रभावित होकर भी लयतालबद्व संगीत विधान के अनुकूल हैं। इनके काव्य में रागतत्व का मार्मिक उद्वेलन है। प्रेषणीयता और प्रभविष्णुता दोनो ही दृष्टियों से महादेवी के गीत छायावाद युग की सर्वोतम उपलब्धि कहे जा सकते है।

सन्दर्भ :–

1. महादेवी– 'यामा–नीहार', पृ0 65
2. महादेवी– 'सन्धिनी' पृ0 80
3. महादेवी– 'यामा–सांध्यगीत' पृ0 227?
4. महादेवी– –नीरजा'
5. महादेवी–'यामा'